International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly
ISSN – 2347-7075
Impact Factor – 5.681
Vol.5 No.3 Jan – Feb 2018

हिन्दी के क्षेत्र में रोजगार के विभिन्न अवसर

प्रा. व्हि. पी. नंदगिरीकर
हिंदी विभागाध्यक्ष,
बॅ. खर्डेकर महाविद्यालय, वेंगुर्ला (महाराष्ट्र)

इक्कीसवीं सदी में व्यक्ती स्तर से लेकर विश्वस्तर में कई बदलाव होते दिखाई दे रहे हैं। आज का युग यह वैश्विकरण का युग है। इस वैश्विकरण के माहौल ने दुनिया की दुरियों को मिटाया है। महत्तपूर्ण बात यह है की साहित्य, ज्ञान, विज्ञान,संस्कृति दुनिया की कई भाषाओं में बिखरी हुई और समय , धर्म, धन दुरियाँ आदि के कारण संसार की सभी भाषाएं सीखना और उसमें बिखरी हुई है और साहित्य हालिल करना इन्सान के लिए आसान काम नहीं है। विश्व में वही भाषा समृध्द एवं संपन्न है जो इन्सान को वैश्विकरण में अपना स्थान बनाए रखने में सफल हो अथवा इन्सान को रोजगार प्राप्ति के लिए विविध मार्ग दिखा देती है। विश्व में अंग्रेजी भाषा ज्यादातर बोली जाती है और भारत को आजादी मिलकर साठ साल बितने पर भी हिन्दी देश की पूर्ण रूप से भाषा नही बन पाई।

26 जनवरी, 1950 से लेकर आज तक हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने का सपना हम भारतवासी तथा हिन्दी प्रेमी देख रहे है। हमारे देश में तो हिन्दी बोलने वालों की संख्या प्रादेशिक भाषाएं बोलने वालों से ज्यादा है । सभी दृष्टियों हिन्दी समृध्द भाषा है । वर्तमान रूप में विश्व के कई शिक्षा संस्थानों तथा विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा में अध्ययन तथा अध्यापन का कार्य चल रहा है। इस दृष्टि से हिन्दी भाषा के साथ अपनी जगह बना रही है। इन्सान को दुनिया में स्थैर्य पाने के लिए कई अवसर है। इसमें अनुवाद का क्षेत्र भी महत्वपूर्ण माना जाता है। भारत जैकसे बहुभाषा - भाषा राष्ट्र में अनुवाद को अधिक महत्व प्राप्त होता हुआ दिखाई दे रहा है।

अनुवाद की वर्तमान स्थिति -

वर्तमान स्थिति में अनुवाद के सामने कई चुनौतियां खड़ी हैं। वास्तव में भारत देश में अनुवाद की कला 19वीं सदी से पहले से अस्तित्व में दिखाई देती है। विशेषत अग्रेजी शिक्षा नीति के चलते अनुवाद विशेष गति प्राप्त हुई। इसके बावजुद भी अनुवाद एक कला के रूप में अधिक विकसित हुआ रोजगार की

दृष्टि से नही। आज भले ही अनुवाद का विकास पूर्ण रूप हुआ दिखाई देता है इसके बावजुद भी वह एक व्यवसाय या रोजी रोटी पाने के महत्वपूर्ण क्षेत्र की दृष्टि से उतना विकसित नही है। परंतु वैश्वकरण के कारण इस क्षेत्र में रोजगार के कई अवसर उपलब्ध हो चुके है और निरंतर हो रहे है।

अनुवाद के क्षेत्र में मुख्यत दो प्रकार के रोजगार के अवसर मिल सकते है।

1 मासिक वेतन लेने वाला अनुवादक

2 व्यवसायाभिमुख अनुवादक

हिन्दी का अध्ययन करने पर निम्न क्षेत्र में रोजगार मिल सकते हैं -

1) दुभाषिया 2) निवेदक 3) अनुवादक 4) गीतकार 5) संपादक 6) पर्यटक मार्गदर्शक 7) हिन्दी अधिकारी 9)विज्ञापन निर्माता 10) राजभाषा अधिकारी 11) रिपोतार्ज लेखक 12) प्रूफ रीडर 13) बहुराष्ट्रिय कंपनी का क्षेत्र 14) जनसंचार का माध्यम 15) राष्ट्रियकृत बँक 16) धारावाहिक लेखक 17) फीचर लेखक 18) शब्दकोश निर्मिती 19) प्राध्यापक 20) तकनिकी क्षेत्र 21) विधि क्षेत्र आदि।

क्षेत्रों में से कुछ का विश्लेषण निम्नानुसार -

1) प्राध्यापक:-

महाविद्यालयीन स्तर पर पूरे भारत में हिन्दी विषय पढाया जाता है, इसमें सरकारी महाविद्यालयीन, निजी महाविद्यालयीन के साथ-साथ भारत के सभी राज्य के विश्वविद्यालय और केंद्रिय विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग कार्यरत है।

प्राध्यापक की नौकरी पाने के लिए छात्रों को एम.ए.,नेट / सेट / पीएच.डी की उपाधि प्राप्त करनी परती है। इसके साथ ही आज तो विदेश के कई दशों के विश्वविद्यालयों में हिन्दी विभाग भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए कार्यरत दिखाई देते हैं। वहाँ पर हिन्दी विषय पढाये जाना हो तो प्रमुखत: विदेशी भाषाओं का ज्ञान होना आवश्यक है। इससे हिन्दी सिखने वाले छात्रों को उस देश की भाषा में तो भी साहित्य उपलब्ध होता तो उसका अनुवाद करके छोत्रों में हिन्दी विषय के संबंध में रूचि बढाने का काम कर सकते हैं।

2) अनुवादक :-

दुनिया में बहुत सारी भाषाएं बोली जाती हैं। तो सभी भाषाएँ दुनिया के सभी इन्सानों को आती हैं ऐसा नहीं है। पर दुनिया भर में फैला हुआ ज्ञान, साहित्य, वैज्ञानिक प्रगती आदि बातों से परिचित होने के लिए अनुवाद का क्षेत्र महत्वपूर्ण माना जाता है। अनुवादक बनने के लिए इन्सान को दो से अधिक भाषाओं

का ज्ञान होना जरूरी होता है। अपना भारत देश तो बहुभाषिक देश है। यहाँ पर उपरोक्त सभी बातें हिन्दी भाषा के माध्यम से हो सकते हैं,क्योंकि हमारे देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी है। यहाँ की ज्यादातर जनता हिन्दी भाषा को समझ सकती है। इसलिए देश में हिन्दी अनुवादकों की माँग दिन ब दिन बढती जा रही है। आज तो केवल साहित्यिक कृतियों का अनुवाद करना इतना ही काम हिन्दी अध्यताओं का नहीं है तो बैंक, रेल, बीमा , डाक, आदि क्षेत्र में हिन्दी अनुवाद को रोजगार मिल सकते हैं।

3) हिन्दी अधिकारी:-

हिन्दी अधिकारी के लिए स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर पर हिन्दी विषय आवश्यक है। साथ ही स्नातक स्तर पर एक तो स्थानिय अथवा अंग्रजी विषय की आवश्यकता है। केन्द्र सरकार के लगभग सभी कार्यालयों में हिन्दी अधिकारी का पद होता है। साथ ही कई सरकारी शिक्षा संस्थानों में भी अनुवादक का पद होने के कारण वहां भी नौकरी पाने के अवसर मौजुद है। विशेषत यहा होने वाला पत्राचार ज्यादा तर अंग्रेजी में होता है इस दृष्टि से हिन्दी अधिकारी का पद विशेष महत्वपूर्ण है।

4) राष्ट्रियकृत बैंकों को क्षेत्र:-

आज का युग यह स्पर्धा का युग बन गया है। इसी वजह से अपने देश के बैंकों को आंतर्राष्ट्रिय स्तर पर अपनी जगह बनाऐ रखना अब आसान नहीं रहा है। बैंकों का व्यवहार यह देश—विदेश के हर भाषिकों के साथ होता है। इसी वजह से बैंक आज अपना मार्केटिंग कर रहा है। ग्राहका के पास कैसे पहले पहुँचा जाए और ज्यादा से ज्यादा इन्सान अपने बैंक के ग्राहक किस तरह से बन सकते हैं यह प्रयास करते हुए दिखाई दे रहे हैं। यह काम केवल बहुभाषी व्यक्तियों द्वारा ही हो सकता है। इसी वजह से आज बैंक के क्षेत्र में भी रोजगार पाए जा सकते हैं।

5) विज्ञापन निर्माता:-

देश में हुई औद्योगिक क्रांति के कारण उपभोक्ता वस्तुओं का उत्पादन दिन ब दिन बढता जा रहा है और वस्तुओं की विपणन की समस्याएं भी बढती जा रही हैं। इसीलिए इन वस्तुओं का विपणन करने का लिए कंपनियों ने विज्ञापन का माध्यम चयन किया है। आज का युग यह विज्ञापन का युग कहा जाता है। हमारे घर में जानकारी या मनोरंजन की वजह से हम समाचार पत्र रेडिओ टेलिव्हिजन आदि का इस्तेमाल करते हैं। पर आज हमार मनोरंजन होता दिखाई नही देता है। सुबह से लेकर शाम तक हर वस्तु का विज्ञापन हमारे आँखों के सामने नजर आता है। ऐसे विज्ञापन के क्षेत्र में भाषा पर अधिकार पाने वाला व्यक्ति विज्ञापन निर्माता बन सकता है। अपने देश में विज्ञापन के क्षेत्र में हिन्दी की आवश्यकता आज दिखाई देती

है। इसके साथ ही विदेशी कंपनियों ने भी अपनी चीजें भारत की जनता तक पहुँचाने के लिए हिन्दी भाषा का चयन किया है। अत इस क्षेत्र में हिन्दी के अध्येता को रोजगार के अवसर दिखाई देता है।

6) दुभाषिये का क्षेत्र:-

दो विभिन्न भाषा बोलने वाले लोगों के विचारों को एक -दूसरे तक पहुँचाने का काम केवल दुभाषी कर सकता है। दुनियाभर में 3000 से अधिक भाषाएँ बोली जाती है। दुनिया के किसी भी इन्सान को इतनी सारी भाषाओं का ज्ञान हो यह संभव नही है पर दुभाषि को दो से ज्यादा भाषाएं आनी चाहिए। सभी देशों के प्रतिनिधि व्यक्ति को अभिव्यक्ति के लिए अंग्रेजी भाषा का ही चयन नहीं करते तो ऐसे अवसर पर उन्हें दुभाषियों की मदद लेनी पडती है। दुभाषियां ही एक ऐसा माध्यम है ज्यो दोनों के विचारों को समझकर अनुवाद के माध्यम से संवाद स्थापित करता है। इस दृष्टि से यह एक ऐसा क्षेत्र है ज्यों रोजगार उपलब्ध करवाता है।

7) साहित्यिक अनुवाद:-

भारत जैसे बहुभाषिक देश में हर प्रांत की भाषा अलग है और प्राचीन काल से यहाँ पर कई भाषाओं में साहित्य की निर्मिती हुई है। इनमें जो महत्वपूर्ण साहित्य है उसका अनुवाद अन्य भाषा में करना यह आसान नहीं होता । इसके लिए अनुवादक को अलग--- अलग भाषाओं का ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक होता है ।भारतीय साहित्य को विदेश में पहुँचाने तथा विदेशी साहित्य को भारतीय भाषाओं विशेषत हिन्दी में अनुवादित करने के लिए एक अच्छे अनुवादक की आवश्यकता होती है और इसकी पूर्ति करने में अनुवादक की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस दृष्टि से इस क्षेत्र में भी अनुवादक के रूप में रोजगार के कई अवसर उपलब्ध है।

8) पर्यटक मार्गदर्शक:-

संचार की क्रांति ने आज समग्र विश्व को कई दृष्टियों से नजदिक लाकर खडा कर दिया है । इसी वजह से लोगों में विश्व को नजदिक से जानने की सुविधा मिली साथ ही विभिन्न संस्कृतियों को जानने की जिज्ञासा भी पैदा हुई। इसी कारण पर्यटन को बढावा मिला और लोग देश-- विदेश पर्यटन करने लगे। भिन्न भिन्न भाषा भाषियों को पर्यटन में प्रमुखता से भाषा की दिक्कत आती है। विशषत भारत जैसे विशाल देश में यह समस्या अधिक है किन्तु पर्यटकों की यह समस्या ही यहां के लोगों को अनुवादक के माध्यम से रोजगार देती है । इस दृष्टि से हिन्दी तथा अंग्रेजी के साथ ही स्थानिय भाषा जानने वाला व्यक्ति पर्यटक मार्गदर्शक के रूप में रोजगार पा सकता है।

9) विधि अनुवाद क्षेत्र:-

विधि क्षेत्र एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ अनुवाद की दृष्टि से व्यापक अवसर मौजुद है। विधि विषयक साहित्य ज्यादातर अंग्रेजी में ही उपलब्द है, परंतु भारत में ज्यादातर प्रादेशिक भाषाएं बोली जाती हैं। इसीलिए भारत में विधि विषयक ज्ञान बहुत ही कम है। लोगों में इस ज्ञान के प्रति एक आकर्षण है। आजादी के बाद भी लगभग वही विधि व्यवस्था बनी हुई है। न्यायालयीन कामकाज लगभग अंग्रजी भाषा में ही चलता है। देश में हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया क्योंकि यह जनता की भाषा है। मात्र यहा की कानून व्यवस्था अंग्रेजी में है। इसीलिए लोगों को इसे समझ ने के लिए कई दिक्कते आती है। इसलिए यह एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ का साहित्य हिन्दी में अनुदित किया जा सकता। साथ ही न्यायालयीन प्रक्रिया निरंतर रूप से अंग्रजी में अपने निर्णय देती है इनका भी अनुवाद हिन्दी में करने वाले अनुवाद को नियमित रोजगार का अवसर उपलब्ध है।इस अनुवाद का फायदा यह भी है कि हिन्दी भाषा में कानून आ जाये तो आम जनता को यह समझने आसानी हो जाएगी और जनता द्वारा कुछ मायनों में कानून का पालन किया जाएगा। इस दृष्टि से तथा आपसी संपर्क बनाए रखने के लिए मदद भी होगी। सभी स्तरों पर विधि साहित्य का अनुवाद होना महत्वपूर्ण है।

10) शिक्षा क्षेत्र:-

शिक्षा क्षेत्र में सर्वाधिक रोजगार उपलब्ध है। विज्ञान तथा औद्योगिक क्षेत्र इक्किसवी सदी सर्वाधिक तेज गति से विकसित हो रहा है। इस क्षेत्र में ई भाषाएँ एक दूसरे से आगे बढने का प्रयास कर रही है। चिकित्सा - विज्ञान – अंतरिक्ष जैसे क्षेत्र ई शोध कार्य में अग्रसर है। इसके साथ ही विश्व भर में ई साहित्य शोधकार्य प्रकाशित हो रहा है। इस साथ ही विश्व भर में विस्तारित इस क्षेत्र में अनुवाद की दृष्टि से रोजगार के कई अवसर उपलब्ध है।

इसके अलावा कई क्षेत्र है - जैसे - समालोचक , हवाई जहाज सेवा, लेखक, संवादकार, धारवाहिक लेखक, मार्केटिंग, शब्दकोश निर्मिती, गीतकार, वैद्यकिय सेवा आदि है।

उपसंहार :–

अनुवाद एक भाषा में प्रस्तुत कथ्य को दूसरी भाषा में पहुँचाने का महत्वपूर्ण माध्यम है। अनुवाद से दूसरी भाषा के पाठकों को स्त्रोत भाषा , साहित्य, अनुसंधान,विज्ञान, संचार, संदेश आदि बातों की जानकारी मिलती है और अनुवाद के माध्यम से देश- विदेश के साहित्य के विभिन्न भाषाओं को पाठकों तक पहुँचने का कार्य किया जाता है। इसके साथ ही महत्वपूर्ण बात यह है कि आज अनुवाद के क्षेत्र में

अनेक रोजगार के अवसर के उपलब्ध हैं, पर इसके लिए छात्रों को बहुभाषिक होना और भाषाओं का संपूर्ण ज्ञान होना अनिवार्य है। आज संसार में वही भाषा समृध्द एवं संपन्न है जो साहित्य के साथ वैश्विक बाजार में अपना स्थान बना सके। अंग्रेजी के साथ हिन्दी ने समय के महत्व को समझ लिया। आज भारत सरकार द्वारा सभी विश्वविद्यालयों में अनुवाद के संदर्भ में कई कोर्स शुरू किए गये है । साथ ही देश भर के महाविद्यालयों में अनुवाद के कोर्स शुरु करने की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची :–

1) प्रयोजनमूलक हिन्दी - डॉ. रमेशचंद्र त्रिपाठी , डॉ. पवन अग्रवाल

2) अनुवाद सिध्दांत एवं स्वरूप - डॉ. सराफ , डॉ.गोस्वामी

3) अनुवाद चिंतन - डॉ. अर्जुन चव्हाण

4) प्रयोजनमूलक हिन्दी- अधुनादतन आयाम - डॉ. अंबादास देशमुख

5) विवेक रिसर्च - VOL -V , 2011